समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–
महाकौशल–संदेश
वर्षः– 17 पृष्ठः– 4 अंक :– 35 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा
RNI No. MPHIN/2001/11140
यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

तीस नवम्बर गीता जयंती पर विशेष लेख

कर्म योग–कर्मबंधन से मुक्ति संभव है

डॉ. किशन कछवाहा

भारत' शब्द के 'भा' से तात्पर्य है ज्ञान । 'रत' याने लीन रहने वाला। व्यापक अर्थ में ज्ञान की खोज में 'रत' (लीन) रहने वाला। पृथ्वी पर भारत ही एक ऐसा देश है जहां पर क्षमा, धैर्य, दया, शुद्धता आदि सद्गुणों का, आध्यात्मिक तथा सर्वाधिक आत्मान्वेषण हुआ है। इसलिये इसे धन्य एवं पुण्यभूमि तथा 'स्वर्गदिपि गरीयसी' कहा गया है।

इस भूमि का एक विलक्षण, रहस्यात्मक और तत्वज्ञान का श्रेष्ठ ग्रन्थ है – 'श्री मद् भगवतगीता'। इस ग्रन्थ ने कई शाताब्दियों से भारत सहित अन्यान्य देशो पर अपनी विशेषता के कारण व्यापक प्रभाव छोड़ा है। जिस व्यक्ति ने इस ग्रन्थ का अध्ययन किया होगा, उसे यह अनुभव हो गया होगा कि यह ग्रन्थ ज्ञान का भण्डार है। महात्मा गॉधी ने स्वयं 'गीता' को अपनी मॉ बताया था। उन्होने कहा था कि जब भी उलझन या दुःख की अनुभुति होती है, वे गीता की शरण में जाते हैं।

किसी भी अन्य पुस्तक का इतना व्यापक प्रसार नही है। गीता की तरह कोई भी अन्य पुस्तक इतनी बड़ी संख्या में व्याख्याओं के साथ प्रकाशित नही हुई है। इसका प्रभाव, समय और स्थान से परे है।

श्रीमद् भगवत गीता साक्षात भगवान श्री कृष्ण के मुख से निःसृत है। इसमें अर्जुन को माध्यम बनाकर मनुष्य मात्र के कल्याण के लिये उपदेश दिया गया है। यह पलायन से पुरूषार्थ की प्रेरित करने वाला ग्रन्थ है। कर्मयोग की इतनी सुन्दर व्याख्या अन्यत्र देखने को नही मिलती है। कर्म होगा,तो पाप पुण्यों की श्रृंखला मानव जीवन के साथ जुड़ेगी ही।

इससे मुक्ति कैसे प्राप्त हो – इस संबंध में अनेक समाधान मिलते हैं, लेकिन 'गीता' में भगवान श्री कृष्ण ने कर्मयोग की सुन्दर और व्यापक व्याख्या की है। यह उत्कृष्ट आध्यात्मिक और दार्शनिक कृति है।

जन्म मिला है तो कर्म करना पडेंगे ही और कर्म करेंगे तो कर्म बन्धन में बॅधना स्वाभाविक है। यह श्रृंखला अविराम चलती ही रहेगी। जो कर्म किये जाते हैं, उनके परिणाम भोगना ही पडेंगे – शुभ हो या अशुभ। यह क्रम चलता ही रहेगा – एक कर्म और फिर उसका परिणाम। फिर दूसरा कर्म और फिर उसका परिषाम। यह कड़ी जन्म –जन्मान्तरों तक जारी रहती है। क्या इससे मुक्ति संभव है ?

गीता में भगवान श्री कृष्ण ने इसका उपाय बतलाया है – '' स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात (2 –40) संसार में राग और द्वेष होना ही विषेमता है और इसी से जन्म मरण रूप बन्धन होता है। मनुष्यों में जब समानता आती है अर्थात जीवन में राग–द्वेष का अभाव हो जाता है, तो जन्म मरण रूप महान भय से रक्षा हो जाती है। श्री कृष्ण कहते है कि कर्म करते समय हम कर्म बन्धन में न बन्धे, यही कर्म योग है। धर्म मार्ग यही है कि कर्म करते हुये हम राग – द्वेष से ही दूर रहे। निष्काम पूर्वक संसार की सेवा करना, राग द्वेष को मिटाने का अचूक उपाय है।

महर्षि वेद व्यास जी (पद्य–पुराण सृष्टि – 19 355–356) कहते है कि '' श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवाव धार्यताम। आत्मः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत।'' (हे मनुष्यों ! तुम लोग धर्म का सार सुनो और सुनकर धारण करो कि जो हम अपने लिये नहीं चाहते, उसको दूसरों के प्रति न करें।

सामान्य अर्थ यही है कि कर्मों के करने की विधि चाहे जो हो लेकिन कर्म करते हुये उस कर्म से किसी प्रकार का लगाव न हो, और न ही द्वेष – यही कर्म योग है। भगवान श्री कृष्ण ने गीता के कई दृष्टिकोण बताये है। इनमे से सबसे पहला है कर्म में आसक्ति का त्याग। सग्डोऽस्त्व कर्माणि – अर्थात कर्म में हमारी आसक्ति नही होगी तो कर्म हमें बन्धन में डाल नही सकेगा। स्वामी रामकृष्ण परमहंस एक बड़ा रोचक उदाहरण दिया करते थे। कटहल को काटना है तो सरसों का तेल लगाकर काटोगे तो वह हाथों में चिपकेगा नही। यह भी अनासक्ति रूपी तेल है जिसका उपयोग करने से कर्म चिपकेगा नही।

गोस्वामी तुलसीदास महाराज ने भी इसी बात को कुछ इस प्रकार कहा है– ''मोह सकल व्याधिन्ह कर मूला, तिन्ह ते पुनि उपजहि बहु सूला।'' अर्थात मोह आसक्ति सभी प्रकार की व्याधियों की जड़ है जिसके कारण अनेक प्रकार के कष्ट जीवन में मिलते हैं। शुभ कर्मो के परिणाम तो भोगने ही पडते हैं। महाभारत में भीष्मपितामह का उल्लेख आता है। जो प्रतिज्ञाओं आश्वासनों की डोर से निरंतर बॅधते चले गये। विवाह नही किया, राज का सुख छोड़ा, लेकिन वंश की, परिवार की आसक्ति के कारण कर्म बंधान से बंधते चले गये और अंततः उन कर्मो की परिणति उन्हे शर – शैया तक ले गयी।

इस कर्म का दूसरा दृष्टि कोण है राग –द्वेष का त्याग। राग या आसक्ति के कारण हम बन्धनों में बॅधते चले जाते है। यही गति द्वेष के कारण होती है। जिसके प्रति हमारे मन में द्वेष का भाव होता है, उसे दूर रखना चाहते हैं। यह भाव भी बॅधता है। भगवान श्री कृष्ण जी कहते है कि प्रीति और बैर भाव दोनो ही बन्धनकारी है। इनसे मुक्त होना ही कर्मयोग है।

कर्मयोग का तीसरा है कर्तापन के भाव का परित्याग। यह काम मेरे द्वारा किया जा रहा है यह भाव भी बॅधने वाला है। कर्म का परिणाम आत्मा को नही बॅधता। इसलिये कर्तापन का भाव एक भ्रम है। इसके परित्याग के भाव से व्यक्ति कर्मयोगी बनता है।

कर्मयोग का चतुर्थ दृष्टिकोण है – 'समत्व। समत्व योग उच्चते ' राग द्वेष से रहित होने पर अपने पराये का भेद मिटता है। समता की स्थिति आती है। चित्ता समता का अनुभव करता है जो कार्य समता के भाव में स्थिर होकर किये जाते हैं, वे कर्मो के बंधन का कारण नही बनते।

कर्मयोग का पॉचवा तत्व है – कुशलता पूर्वक आचरण। 'योग कर्मसु कौशलम्' कहा गया है। अनासक्त होकर कर्म करे यही तो कुशलता है।

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

बांग्लादेश पाकिस्तान की राह पर चल पड़ा है।

ढ़ाका/गत दिनों बांग्लादेश में हिन्दुओ के घरों को आग के हवाले कर दिया गया।

यद्यपि मजहबी कहरता की यह पहली घटना नही है। गतवर्ष भी बांग्लादेश के नेचिकोना क्षेत्र में कतिपय अज्ञात लोगों द्वारा एक मंदिर पर हमला कर न केवल देवी – देवताओं की मूर्तियों को तोड़ा गया, बल्कि मंदिर को भी भारी क्षति पहुँचायी गयी थी। इसके अलावा पवना जिले में भी देवी काली की तीन मूर्तियों को नष्ट कर मंदिर में तोड–फोड़ की गयी थी। उसी वर्ष ब्राम्हनबरिया जिले के नासिर नगर में मुस्लिम वर्ग के कुछ उपद्रवियों ने मंदिर के साथ – साथ हिन्दु परिवारों पर भी हमला किया था। इस दौरान दस मंदिरों को आग के हवाले कर दिया गया था।

यह समय की विडम्बना ही है कि गत 45 वर्षो पूर्व जिस बांग्लादेश को भारत ने पाकिस्तान के खूनी पंजों से मुक्त कराया था, उसी बांग्लादेश में हिन्दुओं पर घोर अत्याचार आये दिन हो रहे हैं। हिन्दुओ के घर , उपासना स्थल, धार्मिक प्रतीक तहस – नहस किये जा रहे हैं।

सन् 1971 मे जब बांग्लादेश का गठन हुआ था, तब पाकिस्तान से अलग धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया गया था। अब जनसंख्या में मुस्लिम समुदाय के आधिक्य से धर्मनिपेक्षता बाना पसन्द नहीं आ रहा। वह इस्लामिक राष्ट्र बनता जा रहा है।

पुलिस के अनुसार संसदीय चुनाव को देखते हुये जमात – ए – इस्लामी हिंसा का बढ़ावा दे रही है। ' ढ़ाका ट्रिव्यून ' ने पुलिस अधिकारी जाकिर हुसैन के हवाले कहा है कि दो स्थानों पर मामले दर्ज किये हैं। 53 संदिग्धो को गिरफ्तार किया गया है।

मंदिर निर्माण की उम्मीद जगी है।

प्रख्यात श्री राम कथा बाचक मोरारी बापू ने श्री राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण की दिशा में आध्यात्मिक सन्त श्री श्री रविशंकर के मध्यस्थता सम्बंधी प्रयासों के सवाल पर अपनी प्रतिक्रिया व्यवत करते हुये कहा कि मैं उनके शुभ प्रयासों को प्रणाम करता हूँ। श्री श्री अगर मध्यस्थता के लिये आगे आये हैं इसका निश्चित ही शुभ परिणाम सामने आयेगा। इन प्रयासों से मंदिर निर्माण की उम्मीद जगी है। उन्होंने यह भी कहा कि नरेन्द्र मोदी की राष्ट्रभक्ति पर कोई अँगुली नहीं उठा सकता।

विषमता का दंश

देश में बढ़ती जनसंख्या, बेरोजगारी, गरीबी, मॅहगाई, चिकित्सा का बढ़ता खर्च और बच्चों की पढ़ाई की फीस सहित अन्य खर्चो से गरीब क्या मध्यम आर्थिक स्थिति वाला परिवार भी त्रस्त है। सरकार की ओर से कुछ कदम अवश्य उठाये गये है लेकिन वे नाकाम सिद्ध हो रहे है। एक ओर गरीब और अधिक गरीबी की ओर जा रहे हैं दूसरी तरफ अमीर और ज्यादा अमीरी की ओर बढ़ते जा रहे हैं। अस्पताल और स्कूल सभी जगह आम व्यक्ति अपने को असहाय पा रहा है सरकार को इस ओर गंभीरता से ध्यान देने की अवश्कता है।

यद्यपि देश में अति अमीरों की संख्या बढ़ रही है। यह भारतीय अर्थ व्यवस्था का एक सकारत्मक पहलू भी हो सकता है लेकिन श्री लक्ष्मी जी की कृपा सबपर वरस रही हो ऐसा नहीं है। देश के अधिकांश गरीबों के लिये कर्ज का बोझ भी बड़ी समस्या है।

स्कूली बस्ते का बोझ घटेगा।

नई–दिल्ली/–

सरकार स्कूली छात्रों के बस्ते का बोझ कम करने के लिये ' ई – बस्ता ' कार्यक्रम को आगे बढ़ा रही है। इसके माध्यम से छात्र अपनी रूचि और पसन्द के अनुसार पाठ्य सामग्री डाउनलोड कर सकेंगे। साथ ही स्कूलों मे डिजिटल बलेक बोर्ड भी लगाया जायगा।

यह एक ऐसा प्लेटफार्म बनेगा जहाँ छात्र, शिक्षक व रिटेलर्स एक साथ मिलकर एक दूसरे की जरूरत को पूरा कर सकते हैं।

राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसन्धान व प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) स्कूलों मे पहली से 12वीं कक्षा के लिये ' ई – सामग्री ' तैयार कर रही है। प्रधानमंत्री की डिजिटल इंडिया पहल के तहत शिक्षा को डिजिटल माध्यम से जोड़ने की पहल की जा रही है।

सम्पादक के नाम पत्र

वामपंथियों द्वारा देश में माहौल बिगाडने को कोशिश की जा रही है। हाल ही में काशी हिन्दू विश्वद्यालय में इसकानजारा दिखाई दिया। प्रत्येक घटना को मोदी – योगी और हिन्दुत्व से जोड़ने वाले ये वामपंथी तब पता नही क्यों शांत हो जाते हैं जब इसी प्रकार की घटना जेएनयू में घटती है। लेकिन बीएचयू में घटी घटना पर ये जमीन – आसमान एक कर देते हैं। विश्वद्यिालय प्रशासन को ऐसे तत्वों पर नजर रखनी चाहिए जो आपराधिक घटनाओं को दो चश्मों से देखते हैं और अपने स्वार्थो की पूर्ति करते हैं।

- बी. एल. सचदेवा
263,आईएनए मार्केट (नई दिल्ली)

शिक्षण संस्थानों में एकछत्र राज के चलते वामपंथियों ने देश को गलत दिशा दी और ऐतिहासिक तथ्यों के साथ जितनी छेड़खानी हो सकती थी, की। उन्होंने मुगलों को वीर, अमनपंसद, सहिष्णु, रहमदिल बतलाकर उनकी शान में पूरे जोर – शोर से कसीदे पढ़े। जबकि हिन्दू राजाओं या फिर देश पर मर मिटने वाले वीर सेनानियों का द्वेषपूर्ण भाषा से उल्लेखकर इतिश्री कर दी। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि आज का युवा न तो देश के वास्तविक इतिहास को जानता है और न ही इतिहासपुरूषों को। यह सोचा – समझा चलन देश के लिए ठीक नहीं है।

– हरीशचंद्र धानुक
लखनऊ (उ. प्र.)

साधारण मास्क भी कारगर नही

कुछ दिनों से दिल्ली में साँस लेना कष्ट दायक होता जा रहा है। इस प्रदूषण के चलते मरीजों की तादाद में बीस प्रतिशत की बढोत्तरी हुयी है। पर्यावरण सबकी चिन्ता का विषय होना चाहिये। यदि इस विषय को वोट बैंक की परिधि में रखकर विचार किया जायेगा तो निश्चय ही परेशानी बढेगी और प्रदूषण से कभी निपटा भी नही जा सकेगा। आज दिल्ली इस संकट से जूझ रहा है तो कल देश के अन्य शहरों पर भी इस प्रकार का संकट आना संभावित है। लोग बिना सोचे समझे कोई भी मास्क खरीदकर बढते प्रदूषण और धुंध की समस्या से जूझने की तैयारी में संलग्न है, इन प्रयासों में उत्पाद की बिक्री तेजी पर है, लेकिन विशेषज्ञों ने चेताया है कि बिना वैज्ञानिक साधन वाले दिशा निर्देश जारी न किये जाये। विशेषज्ञों की माने तो कोई भी मास्क लगा लेने से प्रदूषण से नही बचा जा सकता। केवल सर्टीफाइड मास्क ही कारगर हैं – ऐसा कहना है केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की स्वास्थ्य समिति के सदस्य डॉ. टी. के. जोशी का। अगर मास्क का मानक सही नही है तो मास्क लगाने से फायदा कम नुकसान ज्यादा है क्योकि साधारण मास्क हवा को छानता नही है। साधारण मास्क लेने से सांस लेने में भी जोर लगाना पडता है। एम्स के डॉ प्रसून चटर्जी जी कहते है कि 'मास्क सही प्रकार के होंगे तो ही कारगर होंगे। बड़े लोगों के मास्क बच्चों को लगा दिये जाये तो वे सुरक्षा नही दे पायेंगें। बाहर निकलते वक्त या ह्रदयरोग अस्थमा के मरीजों को ही पहनने की जरूरत है।

स्वामी विवेकानंद के विचार

- उठो, जागो और तब तक रूको नहीं जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाये।

- जो सत्य है, उसे साहसपूर्वक निर्भीक होकर लोगों से कहो, उससे किसी को कष्ट होता है या नही इस पर ध्यान मत दो। दुर्बलता को कभी प्रश्रय मत दो। सत्य की ज्योति 'बुद्धिमान' मनुष्यों के लिये यदि अत्यधिक मात्रा में प्रखर प्रतीत होती है, और उन्हे बहा ले जाती है, तो ले जाने दो, वे शीघ्र बह जाएँ उतना ही अच्छा ही है।

- जो महापुरूष प्रचार कार्य के लिये अपना जीवन समर्पित कर देते है, वे उन महापुरूषों की तुलना में अपेक्षाकृत अपूर्ण है, जो मौन रहकर जीवन यापन करते है और श्रेष्ठ विचारों का चिंतन करते हुये जगत की सहायता करते हैं। इन सभी महापुरूषों में एक के बाद दूसरे का आविर्भाव होता है, अंत में उनकी शक्ति का चरम् फलस्वरूप ऐसा कोई शक्ति संपन्न पुरूष आविर्भाव होता है, जो जगत् को शिक्षा प्रदान करता है।

- मन का विकास करो और उसका संयम करो, उसके बाद जहॉ इच्छा हो वहॉ इसका प्रयोग करो। ऐसा करने पर तुम्हे कुछ खोना नही पडेगा। जो समस्त को प्राप्त करता है, वह अंश को भी प्राप्त कर सकता है।

- हे सखे ! तुम क्यो रो रहे हो ? सब शक्ति तो तुम्ही में है। हे भगवान अपना एश्वर्य विकसित करो। ये तीनो लोक तुम्हारे पैरों के नीचे है। जड़ की कोई शक्ति नही प्रबल शक्ति आत्मा की है। हे विद्वान! डरो मत तुम्हारा विनाश नही है, संसार सागर से पार उतरने का उपाय है। जिस पथ के अलम्बन से यती लोग संसार – सागर के पार उतरे है, वही श्रेष्ठ पथ मैं तुम्हे दिखाता हूँ।

- बडे–बडे दिग्गज बह जायेंगे। छोटे– मोटे की तो बात ही क्या है! तुम लोग कमर कसकर कार्य में जुट जाओं, हुँकार मात्र से हम दूनिया को पलट देंगे। अभी तो केवल मात्र प्रारंभ ही है। किसी के साथ विवाद न कर हिल – मिलकर अग्रसर हो, यह दुनिया भयानक है, किसी पर विश्वास नही है। डरने का कोई कारण नही है। मॉ मेरे साथ है, इस बार ऐसे कार्य होंगे कि तुम चकित हो जाओगे। भय किस बात का ? किसका भय ? बज्र जैसा ह्रदय बनाकर कार्य में लग जाओं।

- तुमने बहुत बहादुरी की है। शाबाश! हिचकने वाले पीछे रह जायेंगे और तुम कूद कर सबके आगे पहुँच जाओगे। जो अपना उद्धार ही कर सकेंगे और न दूसरों का। ऐसा शोर – गुल मचाओ की उसकी आवाज दुनिया के कोने – कोने में फैल जाय। कुछ लोग ऐसे हैं, जो कि दूसरों की त्रुटियों को देखने के लिए तैयार बैठे हैं, किन्तु कार्य करने के समय उनका पता नहीं चलता है। जुट जाओ, अपनी शक्ति के अनुसार आगे बढ़ो। इसके बाद मैं भारत पहुँच कर सारे देश में उत्तेजना फूँक दूंगा। डर किस बात का हैं ? नहीं है, नहीं है , कहने से साँप का विष भी नही रहता है। नहीं, नहीं कहने से तो ' नही ' हो जाना पडेगा। खूब शाबाश! छान डालो सारी दुनियां को छान डालो! अफसोस इस बात का है कि काश मुझ जैसे दो – चार व्यक्ति भी तुम्हारे साथी होते।

- भाग्य, बहादुर और कर्मठ व्यक्ति का ही साथ देता है। पीछे मुड़कर मत देखो आगे, अपार शक्ति, अपरिमित उत्साह, अमित साहस और निस्सीम धैर्य की आवश्कता है और तभी महत कार्य निष्पन्न किये जा सकते हैं। हमें पूरे विश्व को उद्दीप्त करना है।

- साहसी होकर काम करो। धीरज और स्थिरता से काम करना, यही एक मार्ग है। आगे बढ़ो और याद रखो धीरज, साहस, पवित्रता और अनवरत कर्म। जब तक तुम पवित्र होकर अपने उद्देश्य पर डटे रहोगे, तब तक तुम कभी निष्फल ही होओगे। माँ तुम्हें कभी न छोडेगी और आशीर्वाद के तुम पात्र हो जाओगे।

अक्षरधाम -भारत धाम

दिल्ली, आक्रमणकारियों ने 18 बार ध्वस्त की, मंदिर नही बनने दिये, सबसे बड़े आस्था केन्द्र बर्बर हमलावरों की छाया में मस्जिदों व चर्चों के रूप में बने, वहॉ बड़ा मंदिर गॉधी जी के आग्रह पर सेठ बलदेव दास बिरला व उनके पुत्र सेठ घनश्याम दास बिरला ने मंदिर मार्ग पर 1939 में बनवाया। वह था लक्ष्मी नारायण मंदिर। इसका उद्घाटन भी गांधी जी ने किया था। दूसरा, सत्तर के दशक में श्री मति इंदिरा गांधी के सहयोंग से छत्तरपुर में आद्या कात्यायनी मंदिर बना। लेकिन हिन्दु गौरव, वास्तुशिल्प के उत्कर्ष, भारत की सभ्यता व संस्कृति का अद्भुत संस्कृति का दर्शन कराने वाला पहला विराट मंदिर कह सके, ऐसा अक्षरधाम ही है।

यह 2005 में बना था। इसकी प्रेरणा स्वामीनारायण संप्रदाय के महान संत योगी जी महाराज (प्रमुख अध्यक्ष) से मिली थी। यहां आने पर भारत की आत्मा के दर्शन होते हैं। परन्तु मूल अक्षरधाम गुजरात के गॉधी नगर में 1922 में बना था – पूज्य प्रमुख स्वामी की प्रेरणा तथा मार्गदर्शन से। 23 एकड़ में अक्षरधाम का सृजन वस्तुतः हिन्दु गौरव के पत्थरों पर उत्कीर्ण कविता ही है। इसे पूरा होने पर 13 वर्ष पूरे लग गये। इसका मुख्य गोपुरम 108 फिट ऊंचा, 131 फिट चौडा तथा 240 फिट लंबा है। इसमे 97 श्रेष्ठ शिल्प युक्त स्तंभ है, 17 शिखर, 8 गलियारे, 220 पत्थर के आधार एवं 264 अद्भुत मूर्तियाँ है। यहां स्वामिनारायण संप्रदाय के संस्थापक भगवान नीलकंठ वर्णी (सहजानंद) की जीवन गाथा व रामायण, महाभारत, उपनिषदों का परिचय भी मिलता है। यह कहना अतिश्योक्ति नही होगी कि भारत देखना है तो अक्षर धाम देख लीजिये। महान सुधारवादी संत स्वामी रामानंद के शिष्य उ. प्र. में अयोध्या के पास छपैया गांव (जहां आज भी स्वामी नारायण मंदिर है) के निवासी घनश्याम पाण्डे बने जो दीक्षा के बाद सहजानंद कहलाये। महान परिव्राजक, तपस्वी व वीतरागी स्वामी सहजानंद ने हिन्दु समाज को संगठित किया, उनसे कुरूतियॉ छुडवाई, उनकी धार्मनिष्ठा प्रबल की व उस समय इसाई मिशनरियों के कुचक्री कन्वर्जन अभियानों से बचाया। यदि उनके द्वारा गठित, सृजित एवं पुष्ट स्वामिनारायण संप्रदाय न होता तो गुजरात में कितने हिन्दु शेष रहते कहना कठिन है। यह संप्रदाय कालांतर में अनेक शाखाओं व धाराओं में फैला है। अक्षरधाम बोचासनवासी अक्षरपुरूषोत्तम स्वामिनारायण संस्था द्वारा निर्मित है जिसे हिन्दु धर्म की मूल शिक्षाओं का मौजूदा सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि चेहरा कहा जा सकता है। इन दिनो जबकि साधु–संयासियों के बारे में अनेक भ्रान्त धारणाये एवं अर्नगल प्रचार होता है, इस संप्रदाय ने विश्वभर में 700 से अधिक हिन्दु मंदिर, हजारों युवा संयासी, जो इन्जीनियर, डॉ. सीए, एमबीए, बैरिस्टर – अटॉनी एवं श्रेष्ठ चित्रकार भी है – अमेरिका, यूरोप, जैसे स्थानों का सुख छोड़ हिन्दु धर्म के गौरववर्धन व दलित – जनजातियों की सेवा के जरिये ईश्वर तक पहुँचने के पथ को अपनाते है। वर्तमान युग में स्वामिनारायण संस्था का विश्वव्यापी विस्तार व मान्यता का अद्भुत संसार रचने वाले प्रमुख स्वामी गत वर्ष 95 वर्ष की आयु में 13 अगस्त को ब्रह्मलीन हुये। वे लगातार 66 वर्ष तक संस्था के प्रमुख रहे। उन्होने गुजरात के गरीब, जनजातीय क्षेत्रो में युवा संयासी, डॉक्टर, शिक्षक व धर्म प्रचारक भेजे। युवाओं में सद्प्रवृत्तियों के जागरण हेतु 'रवि सभा' को प्रारंभ किया। कुरितियों से हिन्दु समाज मुक्त हो, ऐसा सघन एवं सफल अभियान चलाया तथा मनुष्य की सेवा के माध्यम से ईश्वर सेवा हो सकती है ऐसा भाव जाग्रत किया। अक्षरधाम उन्ही की कल्पना है। वहा नचिकेता की कल्पना है। वहां नचिकेता की कथा को अद्भुत, अविश्सनीय जल – उत्सव के मंत्रमुग्ध करने वाले प्रदर्शन द्वारा समझाया जाता है। प्राचीन भारत में ज्ञान, विज्ञान, प्रौद्योगिकी प्रगति एवं आयुर्वेद, विश्वविद्यालयों की स्थापना, अध्यात्म तथा आधुनिक शिक्षा के समन्वय का दर्शन अक्षरधाम के माध्यम से कराते हुये राष्ट्र व धर्म को जोड़ा गया है। एक हिन्दु मंदिर कैसा होना चाहिये, किस प्रकार उसे हिन्दु समाज का मनोबल बढाते हुये राष्ट्रीय उत्कर्ष में प्रवृत्त होने की प्रेरणा देनी चाहिये, यह अक्षरधाम सिखाता है। 24 सितंबर ,2002 को अक्षरधाम गांधीनगर पर इस्लामी आतंकियों ने हमला किया, जिसमे 32 हिन्दु श्रृद्धालुओं की जान गई व 80 घायल हुये। परंतु प्रमुख स्वामी व संन्यासी अविचलित रहे तथा वीर योद्धा संयासियों की तरह सेवा कार्य में जुटे रहे। स्वामीनारायण संप्रदाय हिन्दु धर्म की रक्षा एवं विस्तार के लिये युवा योद्धा सन्यासी तथा समाज तैयार करे, यही कामना है।जय स्वामिनारायण।

अक्षरधाम में स्वामिनारायण संप्रदाय के संस्थापक भगवान नीलकण्ठ वर्णी (सहजानन्द) की जीवन गाथा और रामायण, महाभारत, उपनिषदों का परिचय भी मिलता हैं। भारत देखना हो तो अक्षरधाम देख लीजिये।

पृष्ठ क्रं. 1 का शेष भाग

कर्मयोग का छटवॉ तत्व है – किये गये सभी कार्यो को भगावान के श्रीचरणों में निवेदित करना। इससे चित में शुद्धता आती है। कर्मयोग द्वारा संसार का उपकार होता है (निष्काम कर्मयोग संसार की सेवा – आराधना – समाज सेवा के रूप में मूर्त रूप में लेता है।) श्रीमद् भगवत गीता एक अद्भुत एवं पुनीत ग्रन्थ है जिसमें वेदों का सार तत्व निहित है। इसमें जीवन काल की कला, जीवन को सही दिशा में ले जाने, कर्म –भक्ति, सभी प्रकार के ज्ञान समाहित है। थोड़े से अभ्यास से व्यक्ति लाभान्वित हो सकता है। कर्म, ज्ञान और भक्ति की इस विलक्षण त्रिवेणी में अवगाहन कर मानव जीवन के गूढ़ से गूढ़ रहस्यों को सुलझाया जा सकता है। यह पलायन से पुरूषार्थ की ओर प्रेरित करने वाला अमर ग्रन्थ है।

सूचना

कृपया आप ~~अपना~~ ई–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल पर भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । – सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com